[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 727 A

Unique Paper Code : 52051407

Name of the Paper : Hindi 'A'

Name of the Course : B.Com. (Prog.)

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. उपन्यास अथवा नाटक की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (12)

2. 'नमक का दरोगा' कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'हीली बोन की बत्तखें' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

P.T.O.

3. 'करुणा' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'जमुना के तीरे तीरे' निबंध का उद्देश्य लिखिए।

4. 'चीनी भाई' संस्मरण के आधार पर चीनी फेरीवाले का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'जिस लाहौर नइ देख्या वो जन्मया नइ' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (10×2=20)

(क) पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी जी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी जी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं नचाती हैं। लेटे ही लेटे गर्व से बोले, चलो हम आते हैं। यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चितता से पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले, बाबू जी आशीर्वाद कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियां रोक दी गई। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा दृष्टि रहनी चाहिए।

(ख) कुत्ते के पिल्ले के समान ही वह घुटनों के बल खड़ा रहता और हंसने रोने की विविध मुद्राओं का अभ्यास करता। हंसी का स्त्रोत इस प्रकार सूख चुका था कि अभिनय में भी वह बार-बार भूल करता और मार खाता। पर क्रंदन उसके भीतर इतना अधिक उमड़ा रहता था कि जरा मुँह के बनाते ही दोनों आंखों से दो गोल गोल बूंदें नाक के दोनों ओर निकल आती और पतली समानांतर रेखा बनाती और मुँह के दोनों सिरों को छूती हुई ठुड्ठी के नीचे तक चली जाती। इसे अपनी दुर्लभ शिक्षा का फल समझ कर रोओं से काले उदर पर पीला-सा रंग बाँधने वाला उसका शिक्षक प्रसन्नता से उठकर उसे लात जमाकर पुरस्कार देता।

(ग) अब प्रश्न यह है कि धूर्तता को ज्ञान की कोटि में रखा जाए कि नहीं और यदि रखा ही जाए तो क्या आगे बढ़ना ही एकमात्र सफलता का मापदंड है ? ये जिज्ञासाएं उठती हैं, पर इनका ठीक-ठीक समाधान नहीं मिल पाता। 'गहना कर्मणो गतिः' कर्म की गहराई आज तक थहाई नहीं जा सकी। साध्य बड़ा कि साधन, सिद्धि बड़ी कि साधना, या सागर बड़ा कि नदी, इन प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर मिल नहीं सका। प्रत्येक युग में इन प्रश्नों की मीमांसा करने का प्रयत्न हुआ है, पर कभी भी कवियों की किसी एक उत्तर पर राय एक नहीं हो सकी है।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) उपन्यास के तत्व

(ख) निबंध का अर्थ एवं स्वरुप

(ग) आत्मकथा और जीवनी में अन्तर